शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2013

फेसबुक पर लोक संवाद के स्वरूप का अध्ययन

साकेत रमण
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

नव माध्यमों ने हमारे सोच के दायरे को बदला है साथ ही अभिव्यक्ति के तरीकों में भी परिवर्तन हुआ है। नवमाध्यमों की वजह से देश काल और परिस्थिति की बातें अब बेमानी सी हो गई हैं। नवमाध्यमों ने चर्चा, परिचर्चा और विमर्श के पुराने तरीके को बदल डाला है और लोक संवाद को एक नया आयाम दिया है। हाल ही मे राजधानी दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार कांड के बाद लाखों युवाओं के इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक मार्च एवं प्रदर्शन के लिए लोगों को संगठित करने का कार्य फेसबुक के ही माध्यम से संभव हुआ। एक अभियान ने जन आंदोलन का रूख अख्तियार किया तो न्यू मीडिया के कारण ही। सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक वर्तमान दौर में लोक संवाद एवं विमर्श की प्रक्रिया को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। शोधपत्र में लोक विमर्श एवं संवाद की प्रक्रिया को एक नया आयाम देने में फेसबुक की भूमिका एवं महत्व का अध्ययन सैंपल सर्वे विधि से इंदौर के नेट उपयोगकर्ताओं के विशेष संदर्भ किया गया है।

प्रमुख शब्द : नव माध्यम, लोक संवाद, फेसबुक, सैंपल सर्वे, उपयोगकर्ता।

परिचयर

समय के साथ-साथ मानव के सोचने एवं विचार करने की आदतें, उसका व्यवहार एवं विमर्श का दायरा भी बदलता जाता है। आज नव माध्यमों ने हमारी सोच के दायरे को बदला है। साथ ही अभिव्यक्ति के तरीकों में भी परिवर्तन हुआ है। नवमाध्यमों की वजह से देश, काल और परिस्थिति की बातें अब बेमानी सी हो गई हैं। नवमाध्यमों ने चर्चा-परिचर्चा और विमर्श के पुराने तरीके को बदल डाला है और लोक संवाद को एक नया आयाम दिया है। पहले संवाद के परंपरागत माध्यम प्रयोग में आते थे परंतु सोशल नेटवर्किंग के उद्भव के बाद आज संवाद के प्लेटफार्म और तरीके बदल गए है। वर्तमान युग में रिश्तों और संबंधो का ताना-बाना भी फेसबुक सरीखे नेटवर्क्स के माध्यम से बुना जा रहा है।

वर्तमान विश्व में नव माध्यमों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कैस्टेल्स (कैस्टेल्स एम. 2004) ने लिखा है कि वर्तमान दौर में शक्ति का निवास किन्हीं संस्थाओं में नहीं है बल्कि शक्ति नेटवर्क्स में निहित है, जो संपूर्ण समाज की संरचना करते हैं। अर्थात वर्तमान समाज एक नेटवर्क सोसाइटी के रूप में बदल चुका है, जिसमें नेटवर्क या न्यू मीडिया सामाजिक संरचना के आधार है।

हाल ही मे राजधानी दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार कांड के बाद लाखों युवाओं के इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक मार्च एवं प्रदर्शन के लिए लोगों को संगठित करने का कार्य फेसबुक के ही माध्यम से संभव हुआ। एक अभियान ने जन आंदोलन का रूख अख्तियार किया तो न्यू मीडिया के कारण ही। नव माध्यम के उद्भव के बाद यह प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण माना जाने लगा कि यह लोकतंत्र और सार्वजनिक विमर्श या लोक संवाद के लिए सहायक होगा या फिर बाधक साबित होगा।

हालांकि पब्लिक स्फेयर सिद्धांत के प्रतिपादक जुरगेन हैबरमास की धारणा थी कि नवीन माध्यम पब्लिक स्फेयर के रास्ते में बाधक बनेंगे, लेकिन अरब क्रांति, भारत में अन्ना आंदोलन, मिश्र की क्रांति, लीबिया की क्रांति एवं हाल के इंडिया गेट मार्च यह साबित करते हैं कि नव माध्यमों ने मास मोबलाइजेशन एवं लोक विमर्श क्षेत्र को एक नई दिशा दी है।

नव माध्यमों का लोकतांत्रिक स्वरूप एवं लोक विमर्श की प्रक्रिया में इनकी भूमिका वर्तमान ग्लोबल परिदृश्य में सर्वविदित है। जैसा कि स्टीवन क्लीफ्ट (2004) का मानना है कि न्यू मीडिया में लोकतांत्रिक मूल्य अंतर्निहित है। अर्थात नव माध्यम लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्द्धन करते हैं। क्योंकि लोक विमर्श या संवाद की अवधारणा एक लोकतांत्रिक अवधारणा है ऐसे में यह कहना सत्य ही होगा कि नव माध्यमए लोकतंत्र एवं लोक संवाद एक दूसरे के पूरक है। नव माध्यमों का इंटरेक्टिव स्वरूप लोक विमर्श की प्रक्रिया को एक नया आयाम देने में पूर्णतया सक्षम है।

मीडिया संगठन चरखा के 2005 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार मुख्यधारा की मीडिया में जनसरोकारों या आम आदमी से जुड़े मसलों को मात्र 2 फीसदी जगह ही मिल पाती है। ऐसे में आम आदमी के लिए वेब माध्यम एक वरदान साबित हुआ है। युवा वर्ग के बीच नवमाध्यमों का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है और लोक विमर्श के परंपरागत माध्यमों का स्थान नए माध्यम ले रहे है। परंपरागत मीडिया में जिन विचारों ए सूचनाओं को आसानी से कवरेज नहीं मिल पाती थी उन्हें वेब माध्यमों ने कवरेज का आसान साधन उपलब्ध कराया है। साथ ही संचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में सही मायनों में पब्लिक जर्नलिज्म के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया है। सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक वर्तमान दौर में लोक संवाद एवं विमर्श की प्रक्रिया को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। शोध.पत्र में लोक विमर्श एवं संवाद की प्रक्रिया को एक नया आयाम देने में फेसबुक की भूमिका एवं महत्व का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1 उभरते लोक संवाद माध्यम के रूप में फेसबुक की भूमिका का अध्ययन

2 फेसबुक के माध्यम से होने वाले विचार-विनिमय के स्वरूप का अध्ययन

संबंधित साहित्य का अध्ययन

हालांकि इस विषय पर भारत में विशेष कार्य नहीं हुए है परंतु पश्चिमी देशों में उपरोक्त विषय पर कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने कार्य किया है, परंतु साहित्य समीक्षा में शोधार्थी को विषय की युक्तियुक्त व्याख्या प्रस्तुत करने वाले अध्ययन नहीं मिले। विषय से संबंधित कुछ विचारों को प्रस्तुत अध्ययन में शामिल किया गया है, जिससे विषय की बेहतर समझ विकसित की जा सके।

कुछ समय पूर्व में व्हाइट हाउस ने गैरेट एम ग्राफ नाम के ब्लाॅगर को प्रेस ब्रीफिंग के लिए पास जारी किया था। तभी से यह समझा जाने लगा कि ब्लाॅगिंग प्रेस की परिभाषा को विस्तार दे रही है। इसी वजह से इसे समानांतर मीडिया भी माना जाने लगा है। इसने सूचना के लोकतंत्रीकरण में मौलिक मीडिया से ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्योंकि इस माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह सबका है और सबके लिए आसानी से उपलब्ध है। जहां यूजर ही संप्रेषक है और वही गेटकीपर भी।

टैप्स्काॅट और विलियम्स ने ब्लाॅग्स जैसे इंटरैक्टीव माध्यमों को जनसहयोग के हथियार के रूप में परिभाषित किया है। उनका मानना है कि कम खर्चीली सहयोगी संरचना से बड़ी संख्या में आम लोगों को परस्पर क्रिया और संवाद करने का अवसर मिला है। कुक का मानना है कि एक सहयोगी प्लेटफार्म के रूप में ब्लाॅग्स में लोगोें के बीच परस्पर क्रिया और संवाद को बढ़ाने में मदद मिलती है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आॅनलाइन माध्यमों ने व्यक्ति की अंतरक्रियात्मकता को एक विस्तार दिया है। सब्बरवाल तरजीत के अनुसार प्रेस एवं मीडिया की स्वतंत्रता विश्व के तमाम लोकतांत्रिक देशों में मौलिक अधिकार के रूप में मान्य है। लेकिन भारत में मीडिया की वर्तमान अवस्था जन.सरोकारों के प्रति इसके जुड़ाव पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। ऐसे में वेब मीडिया ने सूचनाओं के प्रसारए विचारों के आदान-प्रदान एवं आम आदमी के महत्व को बढ़ाने में महती भूमिका अदा की है।

अय्यर बालकृष्ण के अनुसार नव माध्यमों के प्रयोग ने ब्राॅडकाॅस्ट और प्रिंट के न्यूज रूम के स्वरूप को नाटकीय तरीके से बदला है। आॅनलाइन पत्रकारिता पर प्रकाश डालते हुए लेखक का कहना है कि इसने किसी मसले पर विचारों के आदान प्रदान और वाद-विवाद की संभावनाओं का द्वार खोला है।

वेब पर संवाद के प्रमुख तरीके

ब्लाॅग

सोशल नेटवर्किंग साइट

वेब पोर्टल

वेब समाचार पत्र-पत्रिकाएं

अन्य इंटरेक्टिव फोरम

अध्ययन प्रविधि

निदर्शन का प्रकार एवं विधि - शोध समस्या को ध्यान में रखते हुए यह अनिवार्य था कि सैंपल इस प्रकार का हो जिसे समस्या की अच्छी समझ हो। अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि एवं सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से इकाई का चुनाव किया गया है। जब शोध समस्या की प्रकृति वैशेषिक होती है तब निदर्शन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह शोध समस्या विशेष प्रकार की थी। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत 100 छात्रों का चयन किया गया। अध्ययन में सैंपल सर्वे के माध्यम से 20 से 25 आयु वर्ग के फेसबुक यूजर्स का चयन किया गया हैं, क्योंकि ज्यादातर नेट उपयोगकर्ता इसी आयु वर्ग के होते हैं। अतः आयु वर्ग को ध्यान में रखना आवश्यक था। दूसरे स्तर में हमने सुविधाजनक निदर्शन का प्रयोग किया, क्योंकि एक तो सभी लोग बात करने को तैयार नहीं होते है और दूसरे सभी लोग वेब प्रयोगकर्ता एवं फेसबुक यूजर हों यह भी संभव नहीं था। अतः हमने वैसे लोगों को ही अध्ययन में शामिल किया जो फेसबुक प्रयोगकर्ता भी थे और बात करने के लिए तैयार भी थे।

अनुसंधान उपकरणर - अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया है। क्योंकि सामान्यतया यह देखा जाता है कि साक्षर उत्तरदाता भी स्वंय प्रश्न का लिखित उत्तर देने से कतराते हैं। ऐसे में अनुसूची का ही प्रयोग करना तर्कसंगत होता है। अध्ययन में कई प्रश्न ऐसे भी होते हैं जिनका उत्तर देना कई बार उत्तरदाता के लिए मुश्किल होता है या फिर वह उत्तर देना ही नहीं चाहता, ऐसे में शोधकर्ता की उपस्थिति काफी मायने रखती है। शोधकर्ता वैसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए भी उत्तरदाता को प्रेरित करता है जिनका सामान्य परिस्थितियों में कोई भी व्यक्ति उत्तर नहीं देना चाहता।

विवेचना

सैंपल सर्वे से प्राप्त आंकड़ो के अनुसार शत-प्रतिशत उत्तरदाता संवाद के लिए हमेशा इंटरनेट का उपयोग करते है। 30 फीसदी उपयोगकर्ता 2 घंटे से ज्यादा जबकि 20 फीसदी यूजर दो घंटे इस माध्यम का प्रयोग करते है। वहीं 40 प्रतिशत 2 घंटे से कम वेब का उपयोग करते हैए और मात्र 10 प्रतिशत वेब यूजर 1 घंटे से कम वेब का उपयोग करते हैं।

उत्तरदाताओं में फेसबुक यूजर शत-प्रतिशत है। शत-प्रतिशत यूजर ब्लाॅग या सोशल नेटवर्किंग साइट के माध्यम से संवाद करना पसंद करते हैं और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

लगभग 20 प्रतिशत उपयोगकर्ता सप्ताह में प्रतिदिन फेसबुक से कनेक्ट रहते हैं जबकि 30 फीसदी यूजर चार से पांच दिन ही फेसबुक से कनेक्ट होने का समय निकाल पाते है। सबसे ज्यादा 35 प्रतिशत उत्तरदाता प्रति सप्ताह दो से तीन दिन फेसबुक का प्रयोग करते है जबकि मात्र 15 फीसदी लोग दो दिन से कम इस माध्यम का प्रयोग करते हैं।

फेसबुक यूजर द्वारा उपयोग के घंटे को भी ज्ञात किया गया है। जिसमें सबसे ज्यादा 40 प्रतिशत

यूजर दो घंटे से कम फेसबुक पर संवाद करने में समय देते हैं जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाता एक घंटे से कम इस माध्यम का प्रयोग करते हैं। 20 प्रतिशत लोग दो घंटे फेसबुक से जुड़े रहते हैं वहीं मात्र 10 फीसदी लोग ही दो घंटे से अधिक समय तक फेसबुक के माध्यम से संवाद करते है।

संवाद की प्रकृति एवं स्वरूप

सबसे अधिक 35 प्रतिशत उत्तरदाता वेब चैटिंग के लिए फेसबुक का प्रयोग करते है वहीं सबसे कम मात्र 15 प्रतिशत यूजर ही किसी विषय पर चर्चा के लिए फेसबुक का प्रयोग करते हैं। 25 प्रतिशत सूचनाओं के आदान-प्रदान करने के लिए जबकि मनोरंजन के लिए 25 फीसदी उत्तरदाता फेसबुक का उपयोग करते हैं।

लगभग 60 प्रतिशत यूजर किसी न किसी विशेष समूहए समुदाय या फोरम से जुड़े हैं जबकि 40 फीसदी किसी विशेष समुदाय से जुड़े नहीं हैं।

फेसबुक पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजते या स्वीकार करते समय सबसे ज्यादा 35 प्रतिशत यूजर दूसरे यूजर की फोटो एवं प्रोफाइल को आधार मानते हैं वहीं मात्र 15 प्रतिशत उत्तरदाता समान विचार समूह के आधार पर दूसरे से जुड़ना पसंद करते हैं। जबकि 30 फीसदी फेसबुक यूजर उपनाम एवं स्थान को आधार मानते है और 20 प्रतिशत युवा यूजर दूसरे उपयोगकर्ता की शैक्षणिक एवं व्यवसायिक स्टेटस को देखते हुए एक.दूसरे से कनेक्ट होते हैं।

लगभग 40 फीसदी उत्तरदाताओं ने कभी न कभी किसी सामाजिक अभियान या आंदोलन से जुड़ने की बात स्वीकार की वहीं 60 फीसदी उत्तरदाताओं ने ऐसी किसी अभियान से जुड़ने की कोशिश कभी नहीं की। 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय में वर्चुअल स्पेस पर शुरू होने वाला अभियान वास्तविक अभियान में नहीं बदल पाता है जबकि 20 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि ऐसे अभियान वास्तविक अभियान का रूप लेते है।

निष्कर्ष

ज्यादातर युवा उत्तरदाता इंटरनेट का प्रयोग सामाजिक संवाद एवं विमर्श के लिए करते है, हालांकि फेसबुक के माध्यम से होने वाले विमर्श की प्रकृति गंभीर एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हो यह देखने को नहीं मिला। क्योकि सबसे ज्यादा युवा चैटिंग के लिए इस माध्यम का प्रयोग करते हैं।

ज्यादातर युवा फेसबुक पर किसी को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजने एवं स्वीकार करने में दूसरे यूजर की फोटो और प्रोफाइल एवं उपनाम तथा स्थान को महत्व देते है। ऐसे में किसी सार्थक बहस या संवाद की गुंजाइश कम ही दिखती है।

ज्यादातर यूजर दूसरे लोगों से संबंध स्थापित करने सूचनाओं के आदान-प्रदान करने एवं मनोरंजन के लिए वेब का उपयोग करते हैं।

हालांकि किसी फोरम या समुदाय विशेष से भी आधे से अधिक युवा जुड़े है, ऐसे में भविष्य में फेसबुक के माध्यम से सार्थक बहस एवं संवाद

के शुरूआत की संभावना दिखती है। यह आसानी से कहा जा सकता है कि भविष्य में यह मंच लोक विमर्श के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

ज्यादातर यूजर सामाजिक अभियानों या आंदोलन से जुड़ने की इच्छा रखते हैं जिससे लगता है कि वेब यूजर का एक बड़ा वर्ग सामाजिक बदलाव को पसंद करता है और समाज में व्याप्त समस्याओं को लेकर चिंतित है। हालांकि वह वर्ग वेब के माध्यम से ही आवाज उठाकर अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना पसंद करता है। किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष सामाजिक गतिविधि में भाग लेना वह अपने समय की बर्बादी ही मानता है।

सन्दर्भ

1 अय्यर बालकृष्णर 2005 डिजीटल न्यूजरूम, नई दिल्ली, ऑथर प्रेस।

2 हास टैनी द स्टेट ऑफ पब्लिक जर्नलिस्म टुडे, जर्नल ऑफ ग्लोबल कम्यूनिकेशन, वॉल्यूम 4 नं. 1.जनवरी-जून 2011

3 टैप्सकार्ट डी और विलियम्स एडी विकिनामिक्स हाउ मास कोलैबरेशन चैंजिंग एवरीथिंग 2008, लंदन, अटलांटिस बुक्स।

4 कुक जेएल तथा अन्य 2008, ब्लॉक्स एंड द कारपोरेशन मैनेजिंग द रिस्क रीपिंग द बेनिफिट जर्नल आॅफ बिजनेस स्टेटजी 29 य 03 य पृष्ठ 412

5 शर्मा राजीव ए ब्लॉगिंग के बढ़ते कदम, हिंदी डेली मिलाप, 31 मार्च 2007

6 कुंदन संजय, कौन हैं इंटरनेट पर कमेंट करने वाले, अज्ञात

सबसे मूल बात है कि वर्चुअल स्पेस पर शुरू ज्यादातर अभियान जोर-शोर से आरंभ होते है परंतु वे जल्दी ही कमजोर पड़ने लगते हैं। यहां सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वर्चुअल स्पेस पर शुरू किसी भी अभियान को पसंद करना और उसे अपना समर्थन देना अलग बात है परंतु जब उसे वास्तविक लड़ाई में बदलने की चर्चा होती है तो ज्यादातर लोग निष्क्रिय हो जाते है। क्योंकि ज्यादातर यूजर युवा प्रोफेशनल या छात्र होते है जिनके पास अपना काम.काज और पढ़ाई छोड़कर धरना स्थल पर रोज बैठने का समय नहीं होता है। वे चर्चाएं परिचर्चा और विमर्श में तो भाग ले सकते है परंतु जमीनी लड़ाई में नहीं।'

7 सहाय उदय, पत्रकारिता की दुनिया में ब्लॉगिंग की खलबली, हिन्दुस्तान, 8 जून 2008।

वेबसाइट

Jacob, k.s " A human right checklist for india" Article, The Hindu-20 may 2009.

Sabharwal, Tarjeet " Human rights: A selective right?" Mass Communicator, Jan-March 2011, 30-36.

www.thehoot.org

www.gogle.com

www.javnost-thepublic.org/article/pdf/1997/2/4

www.mastersofmedia.hum.uva.nl/2011/10/06